निराला की परवर्ती कविताओं का वस्तुगत सौन्दर्य

डॉ. सुनील कुमार धूबे

आपने प्रारंभिक रचनाओं में कल्पना, आवेग, रूढ़ियों आदि का वर्णन प्रमुखता से करते दिखाई पड़ते हैं, परन्तु अपनी परवर्ती रचनाओं तक आते-आते कवि निराला का स्वर अत्यंत व्यंग्यपूर्ण हो जाता है | वह निराला से विद्रोही निराला बन जाते है | कवि 'तुलसीदास' की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक भवभूति से देश की दयनीय स्थिति का अवलोकन करके कवि का हृदय दग्ध हो उठा जिसके फलस्वरूप कवि निराला का स्वर अत्यंत व्यंग्यात्मक हो जाता है, वे समाज के कार्यों को देखकर के विद्रोही बन जाते हैं | उनकी पहली परवर्ती रचना 'कुकुरमुत्ता' है जिसमें कवि एक सांकेतिक कथा के माध्यम से गुलाब और कुकुरमुत्ते को प्रतीकात्मक रूप से ग्रहण किया गया है | उन्होंने गिलाब को पूंजीपतियों का प्रतीक बनाया है एवं कुकुरमुत्ते को शोषितों का प्रतीक बनाया है | इस कथा का स्थान कम नहीं है, सभी अपनी-अपनी जगहों पर श्रेष्ठ हैं |

'कुकुरमुत्ता' समाज के निम्न वर्ग का द्योतक हैं, वह गुलाब से अपने विषय में कहता हैं :-

'तू हैं नकली, मैं हूँ मौलिक' |[1]

माली की पत्नी गोली तथा नवाब की पत्नी बहार में मिलती हैं, एक दिन गोली अपने यहाँ बहार को कुकुरमुत्ते का कबाब खिलाती हैं | जो बहार को बहुत पसंद आता है, बहार अपने पिता से अपने घर पर कबाब बनवाने के लिए कहती है तो नवाब अपने नौकर से बनाने के लिए कहता है तब नौकर कहता है :-

'फरमाएँ मआफ़ खता

कुकुर्मुता अब उगाये नहीं उगता' |2

यही इस कथा का मूल तत्व है जो इन दो पंक्तियों में आ गया है | सामान्य वर्ग के व्यक्ति का अपना महत्त्व हैं एवं बड़े व्यक्ति का अपना महत्त्व है, किसी एक का महत्त्व किसी से कम नहीं कहा जा सकता है |

कुकुरमुत्ता की भाषा सहज एवं चुटीली हैं | व्यंग्य तथा विनोद भी हैं किन्तु यह घृणारहित हैं | कवि ने सामाजिक विडम्बनाओं से मुक्ति का आह्वान किया है जो इनके ओज पौरुष तथा मानवता प्रेमी होने का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करता है |

कुकुरमुत्ता के बाद कवि अणिमा की रचना करते-करते यह देखता है- यह पूरा संसार दिव्तीय विश्व युद्ध की अग्नि में जल रहा है भारत उससे अलग नहीं हैं | ऐसी अवस्था में कवि निराला का हृदय विषाद रेखा से भर जाता है | जिसके फलस्वरूप कवि का गीत कहीं भक्तिपरक, कहीं रहस्यात्मक और कहीं व्यक्तिगत पीड़ा से भर गया है | कवि निराला ऐसे समय में भगवान् से प्रार्थना करते हैं :-

'दलित जन पर करो करुणा |

दीनता पर उतर आये |

प्रभु तुम्हारी शक्ति अरुणा' |3

कवि निराला अपने 'अणिमा' काव्य संग्रह में अपने आत्मीय तथा लोक-कल्याणकारी महापुरुषों का प्रशस्ति गान प्रस्तुत किया है

– 'भगवान् बुद्ध के प्रति' , 'संत कवि रविदास के प्रति' आदरणीय प्रसाद जी के प्रति आदि | ये प्रशस्तियाँ संबोधन गीत के रूप में रची गई हैं | अपने इस काव्य संग्रह से निराला के सामाजिक यथार्थ का चित्र प्रस्तुत किया हैं –

'चूँकि यहाँ दाना हैं

इसलिए दीन हैं, दीवाना हैं,

लोग हैं, महफ़िल हैं,

नग्में हैं, साज हैं, दिलदार हैं और दिल हैं,

शम्मा हैं, परवाना हैं,

चूँकि यहाँ दाना हैं' |4

कवि निराला ने इन यथार्थ चित्रों को प्रस्तुत करने के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया है वह अत्यंत ही सहज हैं अत: अणिमा की गीत, लय-गति एवं छंद की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध हैं |

विद्रोही कवि निराला की रचना 'बेला' में अलग-अलग बहरों की गजलों का सुंदर प्रस्तुतीकरण किया गया हैं | 'बेला' की रचना करते समय कवि का हृदय अत्यंत शान्तावस्था में था, वह संसार की असारता से परिचय पा चूका था कवि यह समझ चुका था कि व्यक्ति के प्रत्येक कार्य तथा सम्बन्ध के पीछे स्वार्थ ही छिपा हुआ हैं :-

किनारा वह हमसे किये जा रहे हैं,

दिखाने को दर्शन दिये जा रहे है' |5

समाज में चारों तरफ भ्रष्टाचार, अत्याचार, पूँजीवाद के कारण जनता की दुर्दशा हो रही हैं, गरीब लोग गरीब होते जा रहे हैं और अमीर लोग लगातार अमीर होते जा रहे हैं जिससे समाज में एक खाई पैदा होती जा रही है | कवि निराला इसका खुलकर विद्रोह करते हैं एवं कहते हैं :-

भेद कुल खुल जाय वह सूरत हमारे दिल में हैं,

देश को मिल जाय जो पूँजी तुम्हारे मिल में हैं' |6

'नये पत्ते' काव्य संग्रह में कवि निराला पुन: यथार्थ की दुनिया का वर्णन प्रस्तुत करते हैं | उनकी रचनाओं में व्यंग्यबाण तेज चलने लगे है | कवि जन साधारण की भावनाओं से अपना तादात्मय स्थापित करने का सार्थक प्रयास किया है | 'नये पत्ते' काव्य संग्रह में भी शोषितों के प्रति सहानुभूति तथा पूँजी-पतियों के प्रति अपने व्यंग्यबाण की वर्षा की है | नये पत्ते में निराला ने ग्रामीण जीवन के विभिन्न चित्र प्रस्तुत किये हैं |

'आराधना' भी महाप्राण के भक्ति को आगे बढाने वाली कड़ी हैं | जैसा कि इसके नाम से ध्वनित हो रहा है, इसमें कवि का आराधक रूप और अधिक मुखरित हुआ है |

कवि अपनी इन्द्रियों को वश में कर अपनी पशु प्रवृति पर विजय प्राप्त करके वह भगवान् के चरणों में अपने आप को प्रस्तुत करता हुआ दिखाई पड़ता है | अत: आराधना में कवि का आराधक रूप ही ज्यादा मुखरित हुआ है | लोकभाषा को साहित्यिक सौष्ठव प्रदान किया गया है | ये गीत सहज एवं सरल है | अधिकाँश गीतों में लोकधुनों का भी विधान किया गया हैं |

गीताकुंज में आते-आते कवि निराला के अंदर स्वकल्याण एवं जनकल्याण दोनों की भावनाओं का बड़ा ही सुंदर समन्वय स्थापित किया गया है | प्रस्तुत रचन में कवि का आनंदमय स्वरूप दिखलायी पड़ता है तो कहीं उनकी वेदना भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो जाती है | 'जिधर देखिये श्याम विराजे' वरद हुई | शारदा जी हमारी आदि में भक्तमन उस असीम को पुकार उठा हैं | कवि के हृदय में उस अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम, समर्पण, त्याग आदि भावनाएं आ गयी हैं |

महाप्राण निराला जीवन भर समाज में लड़ते रहे मगर समाज कभी भी बदल न सका | उन्होंने समाज को सब कुछ प्रदान कर दिया मगर समाज ने उन्हें दुःख के अलावा कभी कुछ नही न दे पाया | कवि निराला समाज से ऊब जाते हैं मगर समाज अपने जीवन की अंतिम आस्था आ जाने पर वे पुन: कह उठते हैं :-

'पुन: सवेरा एक और फेरा हो जी का' |7

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. कुकुरमुत्ता, पृष्ठ. 41
2. वही. पृष्ठ. 61
3. आणिमा, पृष्ठ. 6
4. वही. पृष्ठ. 86
5. बेला, पृष्ठ. 68
6. वही. पृष्ठ.75
7. संध्याकाकली

डॉ.सुनील कुमार धूबे,

असिस्टेंट प्रोफेसर

पं. महावीर प्रसाद त्रिपाठी, महाविद्यालय, मीरजापुर